ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli
Dongar Kathora
Tal.Yawal , Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email: aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors:-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associated Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Asst. Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** Asst. Professor (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh Samadhan Guruchal,** Asst. Professor (English) Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** Asst. Professor (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** Asst. Professor (Marathi) Dr. A.G.D.Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

-:Review Committee : -

- **Dr. Maxim Demchenko** , Associated Professor, Moscow State Linguistic University, Institute of International Relationships, Moscow, Russia
- **Dr. Vasant G. Mali,** Dept. of Hindi, A. B. College Deogaon (R) Tal. Kannad Aurangabad [M. S.] India.
- **Dr. Rekha P. Gajare,** Head, Dept. of Hindi, P. O. Nahata College, Bhusawal Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** Asst. Professor (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]

Scanned with CamScanner

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

Email ID. aimrj18@gmail.com

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
01	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	ओमप्रकाश	3-7
02	दलित नारी विमर्श : एक दृष्टिकोण	डॉ. सुरेश कानडे	8-11
03	इस्लाम और दलित व दलित मुसलमान	डॉ॰ इबरार खान	12-17
04	इक्कीसवी सदी की कविताओं में दलित विमर्श	प्रो.डॉ.मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	18-20
05	'आल्मा कबूतरी' उपन्यास में आदिवासी जीवन	प्रा.डॉ.वनिता त्र्यंबक पवार-निकम	21-24
06	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	वसुंधरा देसाई	25-29
07	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे	30-36
08	मणिका की कहानी में स्वच्छंद नारी	डॉ.घोडके अरविंद अंबादास	37-39
09	'धार' उपन्यास आदिवासी पीड़ा का दस्तावेज	प्रा.डॉ.भारती बी.वळवी	40-46
10	दलित साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.सुधीर गणेशराव वाघ	47-49
11	हृषिकेश सुलाभ के नाटक में आदिवासी विमर्श	डॉ.अशोक शामराव मराठे	50-54
12	'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य में चित्रित नारी चेतन	प्रा.नितिन विट्ठल पाटिल	55-59
13	'दंडकारण्य' कविता : आदिवासी अस्मिताबोध	प्रा.सुपर्णा संसुद्धी	60-61
14	'पाँचवाँ स्तंभ' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श	डॉ.संजयकुमार शर्मा, डॉ.दिनानाथ मुरलीधर पाटील	62-65
15	कबूतरा जनजाति की त्रासदी : 'अल्मा कबूतरी'	प्रा.पोटकुले हिरा तुकाराम	66-68
16	किन्नरों की आपबीती लक्ष्मी की जबानी- ('मै लक्ष्मी...मै हिजडा'आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)	प्रा.सौ.कविता संदीप तळेकर	69-73
17	स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ एवं निर्मल वर्मा की कहानी माया दर्पण	डॉ.प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी	72-80
18	'विजन' उपन्यास के स्त्री पात्रों का मानसिक अंतर्द्वंद्व	डॉ.संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी	81-84
19	साहित्य एवं नारी विमर्श	संगीता राव	85-87
20	समकालीन हिंदी कहानी में दलित चेतना	प्रा.रज्जाक शेख	88-90
21	दलित साहित्य की अवधारणा	प्रा.पाटोले अनीता किसन	91-93
22	स्त्री चेतना का उपन्यास – 'मुझे चाँद चाहिए'	प्रा.डॉ.पूनम त्रिवेदी	93-96

Scanned with CamScanner

ISSN 2582-5429(online)
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)
www.aimrj.com
हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
Email ID. aimrj18@gmail.com

कबूतरा जनजाति की त्रासदी : 'अल्मा कबूतरी'

प्रा.पोटकुले हिरा तुकाराम
कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर,गढी,गेवराई जि.बीड
Email:- potkuleh@gmail.com

हिंदी साहित्य ने समाज के सभी वर्ग के साहित्य सृजन के लिए स्वीकृत किया है। सभ्य समाज ने जिसे अपने बस्ती में भी स्थान नहीं दिया उस दबे कुचले वर्ग को साहित्य ने स्थान दिया है। इस वर्ग में आदिवासी लोग आते है जो आज भी जंगल में रहकर शिकार तथा जंगल में प्राप्त वस्तुएँ बेचकर जीवन यापन करते है। सभ्य समाज ने पिछडे जनजातियों को हमेशा हाशिये पर रखा है। इन लोगों को सभ्य समाज के कानून ने चोर,डाकू, अपराधी कारार देकर उनका जीना दूभर किया है। अंग्रेजों ने इन्हें 'अपराधी–कबीले' या सरकरा जनजातियॉ कहा है। अंग्रेजों के 'जन्मजात–अपराधी' इस अधिनियम के कारण या इस कानून से पुलिस को अधिकार मिले की इस जाति के निरपराध आदमी को भी जेल में भेजा जा सके। सभ्य समाज के इस नियम ने,कायदे कानून ने पिछडी जनजाति 'कबूतरा' के लोगों का जीना हराम किया है इसका सुक्ष्म अंकन हिंदी साहित्य की सशक्त लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्मा कबूतरी' इस उपन्यास में किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी कबूतरा जनजाति के लोग गॉव से बाहर खेतों में बसते है औ अपनी रोटी तलाशने की कोशिश करते है। जीवन जीने के लिए आवश्यक रोटी के लिए इस जाति के पुरुष चोरिया करने लगे और महिलाएँ शराब तैयार कर बेचने का काम करने लगी। लेकिन सवर्ण जाति के लोगों द्वारा इनको कुचलने का हर समय प्रयास किया जाता है। हिंदी साहित्य की सशक्त लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्मा कबूतरी' इस उपन्यास में बुंदेलखंड की जनजाति 'कबूतरा' के जिंदगी का ताना–बाना,उनके लोग,लुगाइयॉ,उनका प्यार,झगडे,शौर्य,सवर्ण समाज द्वारा किये गये अत्यचारों को सहने की अजोड शक्ति का चित्रण किया है। लेखिका ने 'कीमनल ट्राईब्स ऑफ इंडिया' से भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु का एक वाक्य पुस्तक के आरंभ में दिया है–" किसी भी जनजाति को 'अपराधी' करार नहीं दिया जा सकता। यह सिध्दान्त,न्याय और अपराधियों से निपटने के किसी भी सभ्य सिध्दान्त से मेल नहीं खाता।"[1] स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने सालों बाद भी जनजातियों पर लगा यह कलंक नहीं मिट सका। वास्तव में ' अल्मा कबूतरी' इन्हीं जनजातियों में से एक 'कबूतरा' जाति के संघर्ष,यातना और पीडा की कहानी है। समाज में सवर्ण समझे जाने वाले लोग (कज्जा)और अपराधी जाति के लोग (कबूतरा) इनके बीच बहती धारा को ,कबूतरा जनजाति पर हो रहे अत्याचार को, उनकी त्रासदी को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। कबूतरा जनजाति की जिंदगी बडी विचित्र है, उनके पास अपनी कहने वाली न खेती है न जमीन। सभ्य समाज इन लोगों को अपने खेतों में मजदूरी भी नहीं देता। मजबूरन अपनी रोटी जमाने के लिए कबूतरा लोग चोरी करते है और जंगलों में छूप जाते है। कई बार इन लोगों को जेल भी हो जाती है। अपनी भूख मिटाने के लिए रोटी के खतिर औरतें कच्ची शराब की भट्टियॉ लगाती है और शराब बेचती है। "महुआ और गुड के खमीर ने फसलों को घेर लिया। दारु और दारा के मेल ने गॉवों पर मूँठी मारी। किसान मंत्रबिध्द से खिंचे चले

Scanned with CamScanner

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com

Email ID. aimrj18@gmail.com

आते। कबूतरियॉ ढालती,पिलाती।"[2] कबूतरा जाति ने अपना जीवन जीते समय हर वक्त संघर्ष को गले लगाया है।

कबूतरा जाति के मॉ–बाप की यह मजबूरी है की वह अपने बच्चों को सही–गलत की पहचान सिखाने के बजाए चोरी करने की कला सिखाते है क्योंकि ज्ञान से ,आदर्शों से पेट नहीं भरता पेट भरने के लिए रोटी की आवश्यकता होती है। गॉवों के पास डेरा डालकर रहने वाली कबूतरा जनजाति के लोग अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते। कदमबाई का बेटा राणा पढना चाहता है वह अपना परम्परागत व्यवसाय चोरी करना या शराब बेचना नहीं चाहता। मॉ बेटे को परम्परागत व्यवसाय सिखाना चाहती है और बेटा शिक्षा प्राप्त करना चाहता है। सभ्य समाज में लडका न पढे तो वह बिगड गया कहा जाता है और कबूतरा जनजाति के लोग लडका पढने लगा तो बिगड गया कहते है। जिस प्रकार की परिस्थितियॉ होती है उसी के अनुसार उस समाज के विचार होते है। राणा के जिद्द के कारण उसे स्कूल में दाखिला मिल जाता है। किन्तू स्कूल में मास्टरजी और उसके सहपाठियों द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। मास्टरजी राणा को स्कूल में नल को हाथ नहीं लगाने देते। सभी बच्चे नल का पानी पिते है और राणा को स्कूल के बाहर के तालाब का पानी पिने के लिए कहा जाता है। जिस तालाब का पानी जानवर के भी पिने योग्य नहीं है वह पानी राणा को पिना पडता है। केवल कबूतरा होने के कारण उसके साथ इस प्रकार का घिनौना व्यवहार किया जाता है।

कबूतरा जाति के लोगों का दुर्भाग्य है कि पुरुष या तो जंगल में रहते है या जेल में। और उनकी स्त्रियां शराब की भट्टियों पर या सभ्य समाज के बिस्तरों पर होती है। कबूतरा लोग कभी नहीं चाहते की उन्हें सोना–चांदी,रुपयॉ–धन मिले। वे तो सिर्फ जिंदगी बनी रहने की दुआऍ मॉगते है। कबूतरी बिना आदमी की मछलीसी तडफती रहती है। कबूतरी कदमबाई की पति को किसी ने मार डाला था। उसकी शिनाख्त के लिए उसे थाने में बुलाया जाता है तब वह उसे पहचान कर भी न पहचानती है न रोती है लेकिन वह अंदर ही अंदर टूट जाती है और आकोश भी करती है। वह जानती है सभ्य समाज की रीति को, पुलिस की न्याय को। अगर वह अपने पति के लाश को पहचान लेती तो सभ्य समाज के पुरुषों की और पुलिस की कुदृष्टि को जिंदगीभर झेलना पडता। कबूतरा स्त्रियों की ओर लोगो की दृष्टि अच्छी नहीं है। उनपर विश्वास भी नहीं किया जाता। कदमबाई रोजी रोटी कमाने हेतु बस में चढ गयी तब बस में से आवाजें उठतीं है " कबूतरी है,कबूतरी'। गाडी में बच्चा पैदा कर देगी। बच्चा साला रोएगा नहीं,.....पेट पर कपडा बांध रखा होगा। बडी प्रपंचिन औरते होती है ये।"[3] बस का कंडक्टर कदमबाई पर चोट करता रहा और मुसाफिर गालियॉ देते रहे फिर भी कदम बाई ने बस नही छोडी। पुलिस द्वारा भी इन स्त्रियों पर हर समय अत्याचार किये जाते है। पुलिस द्वारा किये गये अन्याय, अत्याचार को देखकर दिल दहल उठता है। जब पुलिस आती है तो कबूतरा पुरुष खेतों में जंगलो में छिप जाते है और उनके हाथ लगती है उनकी औरते– "पकडो साली को पेटवाली है। मटके जैसा पेट। लाओ इधर । हम बच्चा पैदा करते हैं। .....जमुना का बडा पेट! गेहुँआ के खेत में छिप गई। सालो बेचो दारु! पिलाओ मद रंडिओं! कहॉ मॉ ? कहॉ बेटा ? कहॉ भाई ? कहॉ पिता? औरतों को आदमी खींचने लगे। रिश्ते ऑखों में चुभ रहे हैं।"[4] इन्हीं नर पिछाचो के कारण जमूनी मर गई थी। किसी जाति का ऐसा मजाक और वह भी नारी? लेखिका ने सवर्ण

Scanned with CamScanner

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

के संदर्भ में प्रश्न उठाया है। कबूतरी स्त्रियों के सामने इस प्रकार की परिस्थितियॉं उत्पन्न हो जाती है कि जब कभी पुलिस सिपाही जिद्द करता है तो वह चुपचाप अपना शरीर देती है। वह जानती है की इनकार की कीमत बडी महंगी है। कबूतरा जाति के पुरुषों पर सभ्य समाज (कज्जा) द्वारा आन्याय, अत्याचार किया जाता है। बेटासिंह के बदले में रामसिंह को मार दिया जाता है और बेटी अल्मा को दुर्जनसिंह के पास गिरवी रखा जाता है। इन स्थितियों में धीरज अल्मा को मदत करता है। इसके कारण धीरज के साथ अनैसर्गिक व्यवहार किया जाता है। उसका लिंग उखाडकर उसे हिजडा बना दिया जाता है। इतनी बडी सजा इस प्रजातंत्रिय देश में किसी जाति के लोगों को दी जाती है। इसके अतिरिक्त भी कबूतरा समाज पर अन्याय अत्याचार होते रहे है।

अतः स्पष्ट है कि लेखिका ने कबूतरा कि लेखिकाने कबूतरा जनजाति की जीवन गाथा के माध्यम से हमारे समाज के सभ्य कहनेवाले प्रतिष्ठित लोगों की कथनी और कहनी में अंतर,एक आझाद देश की बढती अमानुषिकता,स्वाार्थीपन,कूरता,झूठ– फरेब को समाज के सामने लाया है। किसी जाति का ऐसा मजाक और वह भी नारी का? लेखिकाने हमारे सामने सहीविचार करने के लिए प्रस्तुत किया है। भारत में कबूतरा के अतिरिक्त और भी जनजातियॉं है और उनकी समस्याएँ भी भिन्न है। इन जनजातियों की महत्वपूर्ण समस्या है अंधश्रध्दा, अशिक्षा, बेरोजगारी के कारण ये लोग अपने मूलभूत विकास से दूर है। शासन की आदिवासी कल्याण और विकास की योजनाएँ कागज पर ही देखने को मिलती है। इसिलिए आदिवासी समाज के वास्तविक कल्याण के लिए शासन की विशेष योजनाओं की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, (भूमिका से)
2. वहीं, पृ.12
3. वहीं, पृ.32
4. वहीं, पृ.44

.....

Scanned with CamScanner